Navchetana Homilies

December 9, 2018

Is: 43:25-44:5

Col. 4:2-6

Lk. 1:26-38

सुसंदेश काल का दूसरा रविवार

प्रतिज्ञात महीने के, आनेवाले मुक्तिदाता के जन्म लेने की प्रतीक्षा में मानवकुल की हजारों पीढ़ियाँ निकल गयी थी। लेकिन जब ईश्वर की मानवमुक्ति की योजना क्रियान्वित होने का समय आ पहुँचा, तो उसके कार्य जल्दी–जल्दी होने लगे। मुक्तिदाता के अग्रदूत के जन्म का सन्देश देकर गाब्रिएल दूत स्वर्ग लौटा था। ज़करियस और एलिज़बेथ के घर में उस विशिष्ट शिशु का स्वागत करने की तैयारियाँ गुप्त रूप से चल रही थी।

तभी छठे महीने गाब्रिएल एक अति महत्वपूर्ण सन्देश लेकर स्वर्ग से आया। पलस्तीन के एक अज्ञात, पिछड़े गाँव नाज़रेत में रहनेवाली लड़की मरियम के सामने वह भव्यता और आदर भाव में खड़ा हुआ। अति गम्भीर था उसका दौत्य। प्रतिज्ञात मसीह के जन्म का शुभ सन्देश मानवकुल को सुनाना। अग्रदूत के जन्म के विषय में ज़करियस को दिया गया सन्देश एक प्रकार से सामान्य था। लेकिन यह दूसरा सन्देश सामान्य नहीं था। यहाँ जन्म लेनेवाला बच्चा सर्वोच्च ईश्वर का पुत्र था। उस को गर्भ में स्वीकार करने के

लिए एक महिला की जरूरत थी। ईश्वर ने उस महिला को सृष्टि के पहले ही चुन लिया था। लेकिन उसकी सहमति के बिना यह संभव नहीं था। ईश्वर किसी भी व्यक्ति के स्वातन्त्रय में हस्तक्षेप नहीं करता। नाज़रेत की मरियम, ईश्वर द्वारा चुनी गई वह सर्वोच्च मानव व्यक्ति थी जिसकी सहमति के बिना ईश्वर की मुक्ति योजना का क्रियान्वयन असम्भव था। इसलिए गाब्रिएल स्वर्ग का सन्देश सुनाने के बाद मरियम के उत्तर के लिए बेसब्री से प्रतीक्षा करता रहा। और तब मरियम बोल उठी– देखिए, मैं प्रभु की दासी हूँ। आप का कथन मुझ में पूरा हो जाये। सर्वथ स्वतन्त्र और सुस्पष्ट था मरियम का उत्तर। उसकी मधुर गूँज स्वर्ग के महिमामय सिंहासन तक पहुँच गयी।

उस सुन्दर दृश्य पर हम ज़रा मनन करें। पहली नारी हेवा ने ईश्वर की आज्ञा ठुकरा दिया और सारी मानवजाति को पापगर्त में डूबा दिया। उसने अपने स्वतन्त्र मन का दुरुपयोग किया और गलत निर्णय लिया। अब उसकी पुत्री, दूसरी नारी मरियम में अपने स्वतंत्र मन का, सदुपयोग करते हुए ईश्वर की इच्छा को सहर्ष स्वीकार किया और मानवकुल को पापगर्त से उठाने का मार्ग प्रशस्त कर दिया। इधर सवाल स्वतन्त्र मन का नहीं, बल्कि सही या गलत निर्णय का है। अक्सर लोग हेवा को कोसते हैं कि उसने गलत फैसला किया और मानवकुल के प्रति अन्याय किया। लेकिन कितने लोग अपने–अपने स्वतन्त्र निर्णयों पर विचार करते हैं? 13 अक्टूबर 2012 के समाचार पत्रों में इटारसी की एक खबर आयी। नशे के लिए घर का सामान बेचने पर एक माँ ने अपने पुत्र को डाँटा। उसको वह बुरा लगा और उसने अपनी माँ की हत्या ही कर डाली और उसको रोकने की

कोशिश करने वाले छोटे भाई और अपनी पत्नी पर भी हमला करके फरार हो गया। कैसा था उस आदमी का स्वतंत्र निर्णय? निश्चित रूप से वह गलत था। इनसान के गलत निर्णयों के फलस्वरूप आत्महत्या, नरहत्या और स्वभाव हत्या होती है, विवाह बन्धन टूट जाते हैं, परिवार मिट जाते हैं, सांपद्रायिक दंगे होते हैं, महायुद्ध होते हैं। रोज़ हम लोगों को अनेक निर्णय लेने पड़ते हैं। हम अपने स्वतंन्त्र मन का कैसे उपयोग करते हैं, इस पर निर्भर है अपना, अपने परिवार का और समाज का भविष्य।

माता मरियम की महानता इस में है कि उसने अपने स्वातन्त्र्य का सदुपयोग किया और उचित समय पर सही निर्णय लिया। मरियम ईश्वर की इच्छा ठुकरा सकती थी। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। मरियम साधारण होते हुए भी असाधारण लड़की थी। धर्मग्रन्थ का उसको अच्छा ज्ञान था। मन्दिर में उसका पालन–पोषण हुआ था। ईश्वर की प्रजा इस्त्राएल का इतिहास उसको मालूम था। जब ईश्वर किसी विशेष कार्य के लिए एक व्यक्ति चुन लेता है, तो उसको कितनी परेशानियों को उठाना पड़ता है, यह भी उसको मालूम था। इब्राहीम, मूसा आदि महानायकों का संघर्षमय जीवन उसके सामने था। अब वह प्रतिज्ञात मसीह की माँ बनने के लिए बुलायी गयी है। धर्मग्रन्थ से वह जानती थी कि मसीह पीड़ायें सह कर ही महिमा में प्रवेश करेगा। दूसरे शब्दों में, उसका पुत्र पीड़ा का, दुःख का, पराजय का, उपहास का मनुष्य होगा। यह सब जानते हुए ही मरियम दूत से कहती है, आप का कथन मुझ में पूरा हो जाये। वह एक बिना शर्त का सम्पूर्ण आत्मसमर्पण था ईश्वर की इच्छा के सामने। उस आत्मसमर्पण से ही ईश्वर की मानवमुक्ति

योजना सम्पन्न हुई। इसीलिये मरियम सारी मानवजाति की स्तुति और धन्यवाद का पात्र है।

फादर माइकिल पालाँपरंबिल सि.एम.आई